वक्त से हारा या जीता नहीं जाता, केवल सीखा जाता है।
– अज्ञात

कोरोना वायरस से त्रस्त दुनिया

बहरहाल, इस खबर से उपजी खुशी का ज्वार अभी उतरा भी नहीं था कि इसी से जुड़ी एक उलटी खबर यह सुनने को मिली कि ऑक्सफर्ड में बन रहे इस टीके का लाइसेंस जिसके पास है, उस विराट ब्रिटिश–स्वीडिश दवा कंपनी ऐस्ट्राजेनेका के शेयर तेजी से गिरने लगे।

अनिल वर्मा।

कोरोना वायरस से त्रस्त दुनिया के लिए सोमवार को लंदन से यह चौंकाने वाली खुशखबरी आई कि इस महामारी का टीका विकसित करने में वहां एक बड़ी कामयाबी हासिल की गई है। ऑक्सफर्ड यूनिवर्सिटी में चल रही वैक्सीन रिसर्च से जुड़ी इस रिपोर्ट को हर जगह भरपूर तवज्जो दी गई, जिसमें बताया गया था कि 1077 लोगों पर इस वैक्सीन के प्रयोग के काफी सकारात्मक और उत्साहवर्धक नतीजे हासिल हुए हैं।

इसमें पाया गया कि वैक्सीन के असर से इन लोगों में एंटीबॉडीज और टी सेल्स दोनों बनीं जो वायरस के खिलाफ पहले और दूसरे सुरक्षा कवच का काम करती हैं। एक और जरूरी बात यह कि इस टीके का कोई नुकसान नहीं देखा गया। किसी–किसी में खांसी, जुकाम और बुखार जैसे कुछ लक्षण जरूर दिखे, लेकिन वे पैरासिटामॉल से काबू में आ गए।

बहरहाल, इस खबर से उपजी खुशी का ज्वार अभी उतरा भी नहीं था कि इसी से जुड़ी एक उलटी खबर यह सुनने को मिली कि ऑक्सफर्ड में बन रहे इस टीके का लाइसेंस जिसके पास है, उस विराट ब्रिटिश–स्वीडिश दवा कंपनी ऐस्ट्राजेनेका के शेयर तेजी से गिरने लगे। इसके शेयर जून से ही ऊपर जा रहे थे, लेकिन कोरोना वायरस का टीका डिवेलप करने में मिली सफलता की खबर फैलने के तुरंत बाद ये गिरने शुरू हुए और पिछले दिन की तुलना में 5. 7 फीसदी गिरकर बंद हुए। थोड़ी देर में साफ हुआ कि टीके पर जारी इस रिसर्च से हर तरफ जो उम्मीदें जुड़ गई थीं, रिसर्च में मिली सफलता उस मानक पर काफी कमजोर साबित हुई।

धीरे–धीरे डीटेल्स आए तो स्पष्ट हुआ कि सफलता तो यह है, लेकिन उतनी बड़ी नहीं कि इससे तत्काल स्थितियों में किसी बदलाव या बेहतरी की उम्मीद बांधी जा सके। यह प्रयोग चिंपैंजी में पाए जाने वाले एक वायरस को लेकर किया जा रहा है, जिसमें कोरोना वायरस की 'स्पाइक प्रोटीन' कृत्रिम रूप से डालकर इसको उसी के जैसा बनाया गया है और उम्मीद की जा रही है कि इससे लड़ने के क्रम में शरीर कोरोना वायरस से लड़ने का तरीका ढूंढ लेगा।

हाल की रिपोर्ट में दर्ज अहम ब्रेकथ्रू के बावजूद रिसर्च टीम यह कहने की स्थिति में नहीं है कि यह वैक्सीन कोरोना के केस में काम करेगी या नहीं, करे भी तो इसके लिए डोज क्या रखनी होगी, और यह भी कि सही डोज के बावजूद यह टीका एक बार लगाने से कोई जीवन भर के लिए कोरोना वायरस से सुरक्षित हो जाएगा, या थोड़े–थोड़े दिन बाद यह कसरत उसके हिस्से आती रहेगी। एक बात तय है कि वैक्सीन को लेकर हर तरफ दिख रही बेकरारी हमें कहीं नहीं ले जाने वाली।

विशेषज्ञ अभी इतना ही भरोसा दिला रहे हैं कि इस बीमारी का टीका बन सकता है और कई अन्य बीमारियों की तुलना में यह जल्दी बन जाएगा। लेकिन वैक्सीन बनने की प्रक्रिया दवा ईजाद करने से ज्यादा जटिल है और इस मामले में धैर्य, संयम और सावधानी बनाए रखने का कोई विकल्प नहीं है।

अस्थाई भ्रम

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

विज्ञापनकर्ता हमें सिखाते हैं कि हमारे लिए फलाँ इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, या फलाँ फैशन के कपड़े, या फलाँ कार बहुत ही जरूरी है। वो हमें यकीन दिलाते हैं कि अगर हम तुरंत इन चीजों को खरीद नहीं लेते, तो इसका मतलब हम में और हमारे जीवन में कुछ ना कुछ गड़बड़ जरूर है। यदि हम इन चीजों पर विचार करें, तो पाएंगे कि ये हमें वो स्थाई खुशियाँ नहीं देतीं जिनका हमसे वादा किया जाता है। हम थोड़े समय के लिए जरूर इनसे खुशी हासिल करते हैं, लेकिन इनके खो जाने या नष्ट हो जाने से, या रिश्ते–नातों के टूट जाने या दूर हो जाने से, हमें बहुत ही दुःख और पीड़ा सहन करनी पड़ती है। जीवन में किसी ना किसी मोड़ पर हमें यह एहसास अवश्य होता है कि बाहरी संसार की खुशियाँ क्षणिक हैं, यह एक अस्थाई भ्रम हैं।

संपादकीय

उलटा न घूमे चक्का

यह नहीं भूलना चाहिए कि अगर उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों में कोरोना का प्रकोप जल्दी नहीं थमा तो गांवों में दिख रहे इस बदलाव पर लगाम लगने में भी देर नहीं लगेगी। इसके लिए संबंधित राज्य सरकारों के साथ ही केंद्र सरकार को भी पहल करनी होगी। जाहिर है, वह गांव बदले दौर में नए सिरे से खड़ा हो रहा है, जिसके बारे में डॉक्टर आंबेडकर ने कहा था, 'ग्राम या देहात के प्रति जिन्हें अभिमान है, वे यह नहीं सोचना चाहते कि देहातों में घटित घटनाओं या उसकी भविष्य की निर्मिति में गांव वालों का क्या योगदान रहा?' वह ग्राम संस्कृति ही थी, जिसके दम पर दुनिया में भारत की अपनी साख बनी थी। गांधी ने इसी गांव को लेकर सपना देखा था कि वह भारतीय संस्कृति का ही नहीं, अर्थव्यवस्था का भी आधार हो। लेकिन उनके सामने ही उनके इस सपने को नकारा जाने लगा था। 1946 में उन्हें चिट्ठी लिखकर जवाहर लाल नेहरू यह कहने में नहीं हिचके थे, 'मैं यह समझ नहीं पाता कि किसी गांव को क्यों सच्चाई और अहिंसा को अपनाना चाहिए। जिसे सामान्यतः गांव कहा जाता है, वह सांस्कृतिक और बौद्धिक रूप से पिछड़ा है। और पिछड़े माहौल में कोई प्रगति नहीं हो सकती'। जाहिर है, इसका असर उपभोक्ता बाजार पर भी देर–सवेर दिखेगा। कोरोना संकट से हासिल सबक के चलते अभी उपभोक्ता हाथ बांधकर खर्च कर रहा है, लेकिन यह तय है कि जब पैसा हाथ में आएगा और कोरोना पर लगाम लगती दिखेगी तो यह पैसा बाजार में पहुंचेगा। अगर गांवों का आर्थिक पहिया इसी तरह गतिमान बना रहा तो शहर भी अनचाहे जनसंख्या दबाव से बच सकेंगे।

सीएमआईई ने 21 जून को खत्म हुए सप्ताह तक के जो आंकड़े जारी किए हैं, उनसे साफ है कि कोरोना के चलते ठप पड़ी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के चक्के को तेज करने में गांव महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

मनरेगा से मिली मदद

उमेश चतुर्वेदी।।

वैश्वीकरण के वैचारिक कंधे पर चढ़कर आए उदारीकरण ने जिस ग्रामीण व्यवस्था को किनारे रखा, कोरोना के वैश्विक आफत काल में वही देश का आर्थिक आधार बन रही है। देश की अर्थव्यवस्था पर निगाह रखने वाली संस्था सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकॉनमी (सीएमआईई) ने 21 जून को खत्म हुए सप्ताह तक के जो आंकड़े जारी किए हैं, उनसे साफ है कि कोरोना के चलते ठप पड़ी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के चक्के को तेज करने में गांव महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। याद कीजिए, इसी संस्था ने तीन मई को खत्म हुए सप्ताह तक के आंकड़े जारी करते हुए बताया था कि देश में बेरोजगारी दर 27.1 फीसद तक बढ़ गई है। तब ऐसा लगने लगा था कि आर्थिक मोर्चे पर जूझ रहे देश का उबरना आसान नहीं है।

आखिर ऐसा क्या हुआ कि ठीक डेढ़ महीने बाद आई इसी संस्था की अध्ययन रिपोर्ट ने उम्मीदों के पंख लगा दिए हैं। जिन गांवों को आर्थिक पिछड़ेपन के लिए जिम्मेदार माना जा रहा था, वे ही अब अर्थव्यवस्था के तारणहार के तौर पर सामने आते दिख रहे हैं। सीएमआईई के आंकड़ों के मुताबिक 21 जून को खत्म हुए हफ्ते में बेरोजगारी दर घट कर महाबंदी से पहले के

स्तर पर यानी करीब 8.5 प्रतिशत पर आ गई है। सीएमआईई का मानना है कि ग्रामीण इलाकों में बेरोजगारी दर कम होने की बड़ी वजह मनरेगा और खरीफ फसलों की बोआई का मौसम है। सीएमआईई के अनुसार मई महीने में जहां मनरेगा के तहत रोजगार की दर 53 प्रतिशत थी, वहीं जून में बढ़कर यह 65 प्रतिशत हो गई है। इसी तरह खरीफ फसलों की बोआई की वजह से 40 प्रतिशत तक रोजगार बढ़ा है।

दरअसल कोरोना महामारी के चलते जारी देशव्यापी महाबंदी ने जहां औद्योगिक केंद्रों को ठप कर दिया, शहरों की जिंदगी को बेपटरी कर दिया, वहीं गांवों पर पलायन का बोझ बढ़ा दिया। करीब दस करोड़ लोग शहरों से गांवों में लौट गए। निश्चित तौर पर यह भयावह स्थिति थी। बेहतर जिंदगी के सपने और पेट की आग बुझाने के लिए गांव छोड़ने को मजबूर निम्न आय वर्ग वाला समुदाय एक बार फिर जब गांवों की ओर लौटा तो माना गया कि वहां भी हालात जल्द ही बिगड़ने लगेंगे। लेकिन केंद्र सरकार ने मनरेगा के लिए आवंटित 61 हजार 5 सौ करोड़ की राशि में जो 40 हजार करोड़ की बढ़ोतरी कर दी, उसने सुप्त पड़ी ग्रामीण अर्थव्यवस्था में तेजी लाने में बड़ी भूमिका निभाई है। गांवों में घटती बेरोजगारी दर और बढ़ते खर्च में बड़ी भूमिका मनरेगा की ही है।

उत्तर प्रदेश, बिहार और झारखंड जैसे राज्यों ने गांव लौटे अपने प्रवासियों को खपाने के लिए जिस तरह की कोशिशें शुरू कीं, उससे भी गांवों की आर्थिक गतिविधियां बढ़ाने में मदद मिली है। पीपल्स एक्शन फॉर एम्प्लायमेंट गारंटी समूह की रिपोर्ट के मुताबिक मनरेगा के लिए आवंटित राशि का तकरीबन 44 फीसद हिस्सा राज्यों ने खर्च कर लिया है। ग्रामीण इलाकों में बढ़ती आर्थिक गतिविधियों की वजह से बैंक भी गांवों की ओर जाने को मजबूर हुए हैं। रिजर्व बैंक के आंकड़ों के मुताबिक कोरोना काल में पिछले साल के मुकाबले 10.9 फीसद कर्ज बढ़ा है। यानी पिछले साल की तुलना में गांवों में लोगों ने कर्ज ज्यादा लिया है। जाहिर है, वे इसका इस्तेमाल अपनी खेती और स्थानीय स्तर के शिल्प और कृषि आधारित उद्योगों में कर रहे हैं।

अष्टयोग- 5127

7			4		3	
4	36	2	34		26	1
		6		7		4
6	34		33		30	5
3		7		2		
	27		35	4	36	7
1		3			7	4

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों ओर के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5126 का हल

1	2	3	7	5	6	4
3	24	6	37	2	32	1
6	1	2	5	7	4	3
5	33	1	29	4	30	6
7	6	5	4	1	3	2
2	38	4	31	3	29	7
4	3	7	1	6	2	5

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

कारोबार का 35 फीसद ही गांवों में

मोहन। अभी तक पूरे भारत के बैंकिंग कारोबार का सिर्फ 35 फीसद ही गांवों में होता रहा है। लेकिन अब बैंक भी मानने लगे हैं कि यह दर बढ़कर जल्द ही 45 से 50 फीसद तक हो सकती है। यानी कोरोना ने एक तरह से भारत की आर्थिक गतिविधियों के आधार को बदलने में बड़ी भूमिका निभाई है। सीएमआईई की रिपोर्ट हो या पीएएजी की या फिर रिजर्व बैंक की, इनसे स्पष्ट है कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था लय पकड़ने लगी है। भारत के कुल उपभोक्ता बाजार में ग्रामीण क्षेत्र की हिस्सेदारी जहां 65 फीसद है, वहीं दोपहिया बाजार का 40 फीसद आधार गांव ही हैं। इन दिनों गांवों के नजदीक वाले छोटे शहरों में साइकिल और दूसरे दोपहिया वाहनों की बिक्री में बढ़ोतरी देखी गई है। इसी तरह ट्रैक्टर की भी बिक्री बढ़ी है।